श्री मान्धाता बालाजी महाराज जी के भव्य प्राकट्य महोत्सव – 2024 कार्यक्रम में माननीय अध्यक्ष का सम्बोधन

जय श्री राम....

जय-जय श्री राम

आज श्री मांधाता बालाजी महाराज जी के भव्य प्राकट्य महोत्सव कार्यक्रम के अवसर पर इस पुण्यभूमि पर बालाजी महाराज के दरबार में आकर, बालाजी महाराज का आशीर्वाद पाकर अभिभूत हूँ।

ऐतिहासिक और सांस्कृतिक नगरी बूँदी की इस मान्धाता की पहाड़ी पर प्रतिष्ठित वीर हनुमानजी की पाषाण प्रतिमा मान्धाता बालाजी के नाम से विख्यात है, जिन पर सकल हिन्दू समाज अपनी गहरी आस्था रखता है। यहाँ दूर-दराज से लोग दर्शन के लिए बड़े उत्साह से आते हैं। साथ ही मान्धाता पहाड़ी पर सैकड़ों वर्षों से साल में एक बार विशाल मेले का आयोजन होता है, जिसमे सैकड़ो की तादात में श्रद्धालु बालाजी के दरबार में दर्शन हेतु पहुँचते हैं।

आज पूरा देश राममय हो रहा है। जिस राम मंदिर के लिए दशकों तक लंबी कानूनी लड़ी गई, वो मंदिर अब आकार ले रहा है। अयोध्या में बन रहे विराट मंदिर के पहले चरण का कार्य पूरा होने जा रहा है। 22 जनवरी 2024 को मंदिर में भगवान रामलला की प्राण प्रतिष्ठा होगी, जिसके बाद मंदिर लोगों के लिए खुल जाएगा।

श्री राम भक्त हनुमान भगवान शिवजी के रूद्रावतार माने जाते हैं। मान्यता है कि हनुमान का जन्म श्रीराम की सहायता के लिए हुआ था। श्री राम के सबसे बड़े बलशाली, ताकतवर और परम भक्त हनुमान का वर्णन रामायण में स्पष्ट है। कहते हैं धरती पर अगर कोई ईश्वर है तो वह केवल श्री राम भक्त हनुमान। हनुमान जी की वीरता और ताकत की अनेकों कथाएं प्रचलित हैं।

हनुमान जी परम् बलशाली हैं और उन्होंने अपने बल का उपयोग धर्म के लिए किया, प्रभु की सेवा के लिए किया।उन्होंने कभी भी परम् पद पाने की लालसा नहीं की । वह प्रभु के सेवक बने रहे और सेवक रहते प्रभु के आशीर्वाद से ईश्वर का पद प्राप्त किया।

सीता जी से हनुमान पहली बार रावण की 'अशोक वाटिका' में मिले, इस कारण सीता उन्हें नहीं पहचानती थीं। एक वानर से श्रीराम का समाचार सुन वह आशंकित भी हुईं, परन्तु हनुमान जी ने

अपने 'संवाद कौशल' से उन्हें यह भरोसा दिला ही दिया की वह राम के ही दूत हैं। सुंदरकांड में इस प्रसंग को इस तरह व्यक्त किया गया हैः

'कपि के वचन सप्रेम सुनि, उपजा मन बिस्वास।
जाना मन क्रम बचन यह , कृपासिंधु कर दास।।'

रामायण में हनुमान जी ने कई बार प्रभु श्री रामचंद्र जी के प्रति अपनी निष्ठा का परिचय दिया है। सुग्रीव और बाली के आपसी संघर्ष के वक़्त भी प्रभु राम को बाली के वध के लिए राजी करना, क्योंकि एक सुग्रीव ही प्रभु राम की मदद कर सकते थे। इस तरह हनुमान जी ने सुग्रीव और प्रभु श्रीराम दोनों के कार्यों को अपने बुद्धि और चतुराई से सुगम बना दिया। यहां हनुमान जी की मित्र के प्रति परम निष्ठा और आदर्श स्वामीभक्ति हम सभी के लिए एक बहुत बड़ी सीख है।

धर्मशास्त्रों में आत्मज्ञान की साधना के लिए तीन गुणों की अनिवार्यता बताई गई है- बल, बुद्धि और विद्या। यदि इनमें से किसी एक गुण की भी कमी हो, तो साधना का उद्देश्य सफल नहीं हो सकता है।

सबसे पहले तो साधना के लिए बल जरूरी है। निर्बल व कायर व्यक्ति साधना का अधिकारी नहीं हो सकता है। दूसरे साधक में बुद्धि और विचार शक्ति होनी चाहिए। इसके बिना साधक पात्रता विकसित नहीं कर पाता है। तीसरा अनिवार्य गुण विद्या है।

विद्यावान व्यक्ति ही आत्मज्ञान हासिल कर सकता है। हनुमान जी के जीवन में इन तीनों गुणों का अद्भुत समन्वय मिलता है। इन्हीं गुणों के बल पर वे जीवन की प्रत्येक कसौटी पर खरे उतरते हैं।

रामकथा में हनुमानजी का चरित्र अत्यंत प्रभावशाली है। मर्यादा पुरुषोत्तम राम के आदर्शों को मूर्त रूप देने में उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम स्वयं कहते हैं- जब लोक पर कोई विपत्ति आती है, तब वह त्राण पाने के लिए मेरी अभ्यर्थना करता है। लेकिन जब मुझ पर कोई संकट आता है तब मैं उसके निवारण के लिए पवन पुत्र का स्मरण करता हूं। जरा विचार कीजिए! श्रीराम का कितना अनुग्रह है

हनुमान पर कि वे अपने लौकिक जीवन के संकटमोचन का श्रेय उनको प्रदान करते हैं और कैसे शक्तिपुंज हैं हनुमान, जो श्रीराम तक के कष्ट का तत्काल निवारण कर सकते हैं।

जो आनंद का समुद्र और सुख के भंडार हैं , जिनकी एक बूंद से तीनों लोक सुखी हो जाते हैं , उनका नाम राम है। वह सुख के धाम हैं और संपूर्ण लोकों को शांति देने वाले हैं. तुलसी दास कहते हैं ' राम ' शब्द सुख - शांति के धाम का सूचक है। राम की प्राप्ति से ही सच्चे सुख और शांति की प्राप्ति होती है।

राम सर्वशक्तिमान हैं। उनकी भौंहों के तेवर मात्र से सृष्टि की उत्पत्ति और विनाश होता है। ऐसे मर्यादा पुरुषोत्तम राम केवल एक आदर्श मनुष्य , पुत्र , भाई व पति ही नहीं बल्कि एक आदर्श व कुशल शासक भी हैं। उनके शासन काल में व्याप्त सुव्यवस्था के कारण ही आज भी रामराज्य का उदाहरण दिया जाता है।

श्रीराम का चरित्र इतना उदात्त है कि वह अपनी शरण में आने वाले का त्याग किसी भी सूरत में नहीं करते हैं , चाहे उसने कितना ही बड़ा अपराध क्यों न किया हो ?

शरणागत की रक्षा करने के लिए उन्हें अपने प्राणों की बाजी क्यों न लगानी पड़ जाए , लेकिन वह उसे अपने से अलग नहीं करते हैं।

लंका का राजा रावण अपने भाई विभीषण को लात मारकर अपमानित करता है और उन्हें देश निकाला दे देता है। विभीषण का अपराध केवल इतना था कि उन्होंने रावण को सीता जी को ससम्मान श्रीराम के पास पहुंचाकर उनकी शरण में जाने की सलाह दी थी। तब विभीषण आकाश मार्ग से प्रभु राम की शरण में आते हैं और भगवान राम सुग्रीव द्वारा विभीषण के प्रति संदेह जताने के बावजूद शरणागत की रक्षा करने की बात करते हैं। श्रीराम शरणागत की सर्वविध रक्षा करने वाले हैं।

आज व्यक्ति आत्मकेंद्रित हो गया है जानवरों की तरह केवल अपने लिए ही जीने वाला 'बिना पूंछ का जीव '। उसकी सोच ' मैं ' और ' मेरा परिवार ' तक सीमित रह गई है। वह अपने सामने हाथ पसारने वाले व्यक्ति का तिरस्कार और अपमान करता है , फिर उसकी शरण में आने वाले की तो बात ही क्या ? शरणागत से कहता है- मैंने अनाथालय नहीं खोल रखा है कि जब चाहे , जो भी मेरे घर चला आए।

राम की तरह हम भी शरणागत की रक्षा करें , दीन - दुखियों के काम आएं , तभी हमारे जीवन की सार्थकता है।

मैं बालाजी महाराज से समस्त देशवासियों की सुख, समृद्धि की कामना करता हूँ और समस्त भक्तजनों को इस ऐतिहासिक आयोजन के लिए बधाई देता हूँ।

जय श्री राम !

***